शहीदों की आवाज़ कल्याण संघ (पंजीकृत)
Voice of Martyrs Welfare Association (Regd.)
Registration No. HR/001/2014/00342
Regd. Office : # 587, (Park Corner) Sec. 21, Panchkula 134112
Mobile: 09316131225, 09866983525
E-mail : voiceofmartyrsorg@gmail.com | Web : www.voiceofmartyrs.in

अपने लिए जिये तो क्या जिये.....
आओ हम सब मिलकर बने आवाज शहीदों की

Vijay Kr. Sangwan
President

No. VOM/ 8399-8400/18
Date : 09 मार्च 2018

सेवामें,

श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी जी,
माननीय प्रधानमन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली ।

विषय :मातृभूमि एवं मानवता के लिये दिये गये सर्वोच्चय बलिदान पर शहीदों के परिवारों को केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा उचित मान सम्मान स्वरूप आर्थिक सहायता के साथ अन्य सुविधायें प्रदान करने हेतु निवेदन ।

महोदय,

निवेदन यह है कि हम वर्ष 2014 से लगातार शहीद परिवारों के साथ हो रही अनदेखी व उनके जायज़ अधिकारों के लिए महामहिम राष्ट्रपति महोदय से लेकर माननीय प्रधानमंत्री, सभी राज्यों के महामहिम राज्यपाल एवं माननीय मुख्यमंत्री को सीधे तौर पर अपनी मांगों के सम्बन्ध में ज्ञापन-पत्र भेज चुके हैं। **(प्रतियाँ सलंग्न)** जिन पर कोई उचित कार्यवाही नहीं हुई है और न ही कोई आश्वासन प्राप्त हुआ है यहाँ तक कि बार- बार अनुरोध करने उपरांत भी हमें आपसे मुलाक़ात का अवशर प्राप्त नहीं हुआ है ।

महोदय, जिसने जन्म लिया है उसे एक दिन जाना ही है, परन्तु ऐसी जिन्दगियाँ कम ही होती हैं जो वतन पर कुर्बान हो गई । आप इस बात का अंदाज़ा लगा सकते हैं कि जिस परिवार का एकलौता सहारा देश पर कुर्बान हो गया उस परिवार पर क्या बीतेगी । निश्चित तौर पर उन शहीद परिवारों को सरकारी तौर पर सम्पूर्ण सम्मान व आर्थिक सहायता देने की जिम्मेदारी केंद्र और राज्य सरकारों की बनती है ।

अतः आपसे पुनः विनम्रतापूर्वक अनुरोध है कि शहीद परिवारों की लम्बे समय से चली आ रही निम्नलिखित मांगों को पूरा कर शहीद परिवारों को सम्पूर्ण सम्मान के साथ अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए शहीदों को अपनी सच्ची श्रद्धांजलि समर्पित करें।

1. आर्थिक सहायता : आज़ादी से लेकर अब तक मातृभूमि व मानवता के लिए शहीद हुए लगभग 23000 शहीदों के परिवारों में लगभग 85 प्रतिशत परिवार ऐसे हैं जिनको पेंशन के अतिरिक्त कोई भी आजीविका के साधन उपलब्ध नहीं करवाये गए हैं। इस मंहगाई के दौर में वह परिवार अपनी मूलभूत सुविधाएं जैसे मकान, बच्चों की अच्छी शिक्षा ,विवाह, स्वास्थ इत्यादि का खर्च उठाने में सक्षम नहीं हैं। अतः मूलभूत सुविधाओं को पूरा करने के लिए उन परिवारों को केंद्र व राज्य सरकारों की और से एक-एक करोड़ की आर्थिक सहायता राशि प्रदान की जाये।
2. शहादत को पदक के समान मिले सम्मान : खिलाड़ी खेलों में पदक लेकर देश का नाम रोशन करता है और वीर सैनिक उसी वतन की रक्षा के लिए अपने जीवन का सर्वोच्चय बलिदान देता है। खिलाडियों को पदक लाने पर मिलने वाली 3 से 6 करोड़ की ईनाम राशि व सरकारी नौकरी के समान, शहीद परिवार को भी 3 से 6 करोड़ की सहायता राशि व कम से कम परिवार के एक सदस्य को उसकी शैक्षणिक योग्यता के आधार पर सरकारी नौकरी प्रदान की जाये। क्योंकि किसी भी सूरत में शहादत से पदक बड़ा नहीं?

..2.

3. लोकसभा/ राज्यसभा व विधानसभा की सीटों में मिले आरक्षण : सही मायनों में आरक्षण केवल वतन पर कुर्बान होने वाले वीर शहीदों के परिवारों और अंतरराष्ट्रीय खेलों में पदक विजेताओं तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर के लेखक, कवि, अर्थशाष्त्री, शिक्षाशास्त्री, व्यंगचित्रकार, कलाकार, साहित्यकार, पत्रकार, प्रशासक, क़ानूनविद्ध, वैज्ञानिक इत्यादि को ही मिलना चाहिए। जिनकी पहचान किसी जाति या धर्म से नहीं होती यह पूरी तरह देश और मानवता के प्रति समर्पित श्रेणी है,जो पुरे समाज को संगठित करती है। अतः देश के शहीद परिवारों के लिए लोकसभा / राज्यसभा व विधानसभा में सीटें आरक्षित की जायें। माफ़ करना वोट की राजनीति करने के लिए जातिगत आधार पर दिया गया आरक्षण समाज में नफ़रत पैदा कर केवल समाज को तोड़ता है जोड़ता नहीं ? यह किसी भी देश की प्रगति में सबसे बड़ी रुकावट पैदा करता है, जो संगठित नहीं विभाजित करता है

4. वीर शहीदों के नाम पर हो सरकारी ईमारतों, सड़कों, पार्कों और शिक्षण संस्थानों का नामकरण : शहीद किसी एक परिवार की अमानत नहीं वह पुरे देश का स्वाभिमान हैं। देश का स्वाभिमान व शहीदों का सम्मान बढ़ाने के लिए वीर शहीदों के नाम पर सरकारी ईमारतों, सड़कों, पार्कों और शिक्षण संस्थानों का नामकरण किया जाये।

5. शहीद परिवार को यातायात-साधनों में मिले छूट : शहीद विरांगना व बच्चों तथा माता-पिता को देश भर में रेल व बसों में फ्री पास सुविधा के साथ-साथ देश विदेश की हवाई यात्रा में 70 प्रतिशत किराए में छूट प्रदान की जाये।

6. शिक्षण संस्थानों में प्रवेश सुनिश्चित करना व आजीविका के साधन उपलब्ध करवाना : शिक्षा के क्षेत्र में स्कूल, कालेज से लेकर आई.आई.टी. व आई.आई.एम. तक के शिक्षण संस्थानों में निःशुल्क सत-प्रतिसत प्रवेश सुनिश्चित करने के साथ-साथ जिन परिवारों को आजीविका के साधन नहीं मिले हैं उन सभी शहीद परिवारों को आजीविका के साधन उपलब्ध करवाये जायें, ताकि उनका जीवन बिना किसी समस्या के निरंतर आगे बढ़ता रहे।

7. स्कूल पाठ्यक्रमों में शहीदों के शौर्य का वर्णन व शहीद स्मारक बनाना : जिला स्तर पर शहीद स्मारक बनाए जायें जहां उस जिले से सम्बंधित शहीदों के नाम सुनहरे अक्षरों में लिखे गये हों और स्कूल पाठ्यक्रमों में शहीदों के शौर्य का वर्णन होना चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ियों में देश और तिरंगे के प्रति पूर्ण आस्था और सम्मान बढ़े, शहीदों और संविधान के प्रति कृतज्ञता और अनुशासन पूर्ण रूप से बना रहे जो उन्हें सच्चा भारतीय होने का गौरव प्रदान करने के साथ-2 देश सेवा करने का जज्बा और जनून पैदा करेगा।

8. शहीदों की तीसरी पीढ़ी को सरकारी नौकरी प्रदान करना: वर्ष 1962 (भारत-चीन) 1965 व 1971 (भारत-पाक) युद्ध के दौरान व इससे पूर्व शहीद वीर शहीदों की तीसरी पीढ़ी (पोता- पोती एवं दोहता-दोहती) को उनकी शैक्षणिक योग्यता के आधार पर सरकारी नौकरी प्रदान की जाये। क्योंकि 1962 ,1965 व 1971 युद्ध के दौरान शहीद वीर सैनिकों के बच्चे 50 वर्ष से भी ज्यादा की आयु पार कर चुके हैं जो सरकारी सेवा में आने के पात्र नहीं रहे हैं।

महोदय, मैं कविता के माध्यम से भी अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए आपसे विनम्रता पूर्वक अनुरोध करता हूँ कि शहीद परिवारों के लिए उपरोक्त मांगें उनके बलिदान के बदले तुच्छ लगती हैं। आशा: करता हूँ मेरी कविता की पंक्तियाँ आपके हिर्दय को भी छुएंगी:-

कविता पंक्तियाँ

माँ को छोड़ा बाप को छोड़ा, छोड़ा अपनी बहन का प्यार,

अपना जीवन साथी छोड़ा, नहीं सुनी बच्चों की पुकार।

धरती माँ को शीश नवाया, फिर तिरंगे को किया सलाम,
मातृभूमि की रक्षा की खातिर, आगे बढ़ा वो वीर-जवान।
भारत- माँ के आँचल पर नापाक पड़े, कदमो के निशान,
धो डाले लहू से अपने, कहके अमर रहे मेरा हिंदुस्तान।
दुश्मन को कर ढेर दिया, फिर उसने दे दी अपनी जान,
भारत- माँ की गोद में सो गया, फिर न जगने वाली नींद।
यह देख भारत-माँ की अश्रुधारा-2, बह निकली नदियों के समान,
शहीदों की शहादत से है, हम भारतियों की पहचान....हम भारतियों की पहचान..

➢ शहीदों का पैगाम वतन के नाम...

दुःख बटोरे हमने सभी के, तुम्हारी खुशियों पर कुर्बान हुये!
अब चमन मेरा है खतरे में, फिर तुम क्यों अनजान हुये!!
अब तो जागो देश मेरे, याद करो हमारी कुर्बानी को!
देख रही है रूह हमारी, अपनों की बदहाली को!!
फर्ज निभाया हमने अपना, अब तुम्हारी बारी है!
अहल-ऐ-वतन-2, अब जिम्मेदारी तुम्हारी है....

महोदय, हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप द्वारा हमारी मांगों पर हिर्दय की गहराइयों से अमल करते हुए शीघ्र ठोस कदम उठाये जायेंगे।

धन्यवाद सहित

जय हिन्द!

निष्ठापूर्वक,

09/03/18

President
Voice of Martyrs Welfare
Association (Regd.)

सलंग्न / प्रतियाँ

प्रति महामहिम राष्ट्रपति महोदय को सम्मान पूर्वक इस आशा: के साथ प्रेषित की जाती है कि लम्बे समय से चली आ रही शहीद परिवारों की उपरोक्त सभी जायज़ मांगों को स्वीकार करने हेतु केंद्र व राज्य सरकारों को आदेश जारी करने की कृप्पा करें और हमें अपने किमती समय में से थोड़ा वक़्त निकाल कर आपसे मुलाक़ात का अवसर प्रदान करें।

निष्ठापूर्वक,

09/03/18

President
Voice of Martyrs Welfare
Association (Regd.)